

कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड-लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

"आँइ यौ बाबा, तहिन तँ बाइढ़ोमे अहिना होइत हेतइ?"
बाबा बजला- "हँ, प्रकृतिमे पाँचटा जे तत्व अछि जेना अकास, सूर्य, हवा, जल आ धरती एही पाँचो तत्वसँ बनल ई शरीर अछि आ अही पाँचोक नजैर सभ मनुखपर बराबर अछि। यएह ने देवता भेल, जेकरामे कोनो भेद-भाव नइ होइ। अकासमे जेकरा जेतेक उड़बाक होइ उड़ि सकैए। सुरुजक नजैर सभपर बराबर पड़ैत अछि। मौसमक हिसाबसँ अपन गुण-अवगुण छइ। बैशाख-जेठमे गर्मी जन-मारुख होइए आ वएह गर्मीक जाड़मे संजीवनी बुटीक काज करैत अछि। तहिना जलोकेँ छै, सबहक लेल बराबर बरसैत अछि। मुदा वएह जल कहियो प्रलयकारी बाढ़ि सेहो आनि दैत अछि तँ कहियो पियासक लेल तरसबैत सेहो अछि। तहिना हवोकेँ छै, सबहक लेल बराबर। कहियो मारुख तँ कहियो शीतलता सेहो दैत अछि। तहिनाने धरतियोक अछि। धरतीकेँ धरती माता कहि कऽ लोक पुकारैत अछि, जहिना माए अपन धिया-पुताकेँ केतबो कष्ट सहि कऽ पालन-पोषन करैत अछि तहिना ने धरती सेहो करैत अछि।"


सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली

साभार : 'पुनर्नवा' (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड-लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

माएकेँ एका-एक जोश एलै ठाढ़ भऽ असगरेमे बाजल- “ठहर, ई जे सड़ल-गलल नियम मर्द सभ बनौने अछि तेकरा तोड़ैक अछि। अपने मर्द सभ विधुर भेलाक बादो दूटा बिआह करत आ स्त्रीगणक लेल प्रतिबन्ध। की ओकरा कोनो सोगारथ नहि छइ? ओकरा कोनो अधिकार वा कर्तव्यक बोध नै छइ? की माल-जाल जकाँ कतौ खुटेसल रहत? आकि विधवा सबहक लेल बनारस वा काशीए मुक्तिक स्थान छै, जेतए वेश्यावृतिक अड्डा बनल छइ। नै ऐ कानून सभकेँ तोड़ैक अछि। हम नारी संगठन बनेबै आ सड़ल-गलल कानून सभकेँ हटेबै। आ समान अधिकार कर्तव्यक लेल लड़ाइ लड़ब।”


सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली

साभार : ‘पुनर्नवा’ (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड- लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

“हइ चन्द्रकला दाय, मर्दसँ कहीं स्त्रीगण एकरूपता करत से सम्भव छइ। मर्दक बनाबट दोसर छै, स्त्रीगणक बनाबट दोसर छइ। काजो-धन्धा अलगे-अलगे छै से केना हएत। चन्द्रकला उत्तर दैत कहए लगली ठीके स्त्रीगणक दुश्मन स्त्रीगणे होइत अछि। कहियो कोनो बातकेँ विचारबो केलक हेन। जहिये बेटी जन्म लैत अछि तहियेसँ ओकरा हेय दृष्टिसँ देखल जाइ छइ। कहैले तँ भगवतीकेँ, लक्ष्मीकेँ, कालीकेँ, सरस्वतीकेँ जन्म भेल हेन मुदा बेवहार केहेन करैत अछि से तँ सबहक नजैरपर छह।”


सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली

साभार : ‘पुनर्नवा’ (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड-लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

भूतक चर्चा करब तँ भूते ने धरत। वर्तमानकेँ सम्हारब तखने ने भविष्यो बनत। मर्द जँ विधुर होइत अछि तँ कियाक ने विधवे जकाँ समए बितबैत अछि। पहिने मर्दक वर्चस्व छेलै, जेना-जेना मन भेलै तेना-तेना कानून कैदा बनबैत गेल। है दाय सभ जँ औरतकेँ प्रसव पीड़ाटा नै करऽ पड़ै तँ एकोटा काज धरतीसँ अकास तकमे नै अछि जे महिला नै कऽ सकैत अछि। अपन विकासक लेल अपने आगू बढ़ए पड़त। गप-सप्पसँ किछु नै होइ छै। काज केने गुण-अवगुण बुझबहक। जाति तँ दूइएटा छै मर्द आ औरत। और सभ तँ बनौआ छिऐ।



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड-लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

2001 इस्वी तक समाज सेवा।

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

"बाबू आब चाहक दोकान छोड़ि दियौ। हम सभ भाँइ आब कमाए-खटाए लगलौं। आब अहाँक उमेरो पचपन-साठि भेल। सभ दिन कि काम-धन्धा करिते रहब।"

"बौआ कहलह तँ बड़ नीक बात, मुदा चाहे दोकानक बदौलत तूँ सभ मनुख बनलह आ आइ शहर जा रूपैआ-पैसा देखै छहक। हम तँ कौहुना अपन रोजगारमे लागल रहै छी। देहकें धुनि गुजर-बसर करै छी। कमाएल-खटाएल देह अछि, जेतेक शरीरकें चलाएब-फिराएब तेतेक ने देहक खून चालू रहत आ अपनो दुरुस्त रहब। तूँ सभ तँ हमरा काहिल बनबैक बात कहै छह। जाबत धरि पैरुख अछि ताबत धरि हम कमेबे-खटेबे करबह। रफिक मियाँकें नहि देखलहक, पाँचटा बेटा छै, पाँचो कमासुत, वेचाराकें सभ काम-धन्धा छोड़ा देलक। काज छुटिते वेचरा लोथ भऽ कऽ मरि गेल। नोकरियोबला कें तहिना होइ छइ। जहाँ ने कि काजसँ रिटायरमेन्ट भेटल कि वेचारा अपनाकें कोनो जोकरक नहि बुझऽ लागल। जिबाक बीस बर्ख तँ जीबत पाँच बर्ख। मने झूस भऽ जाइ छइ।"



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली

साभार : 'पुनर्नवा' (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत